The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

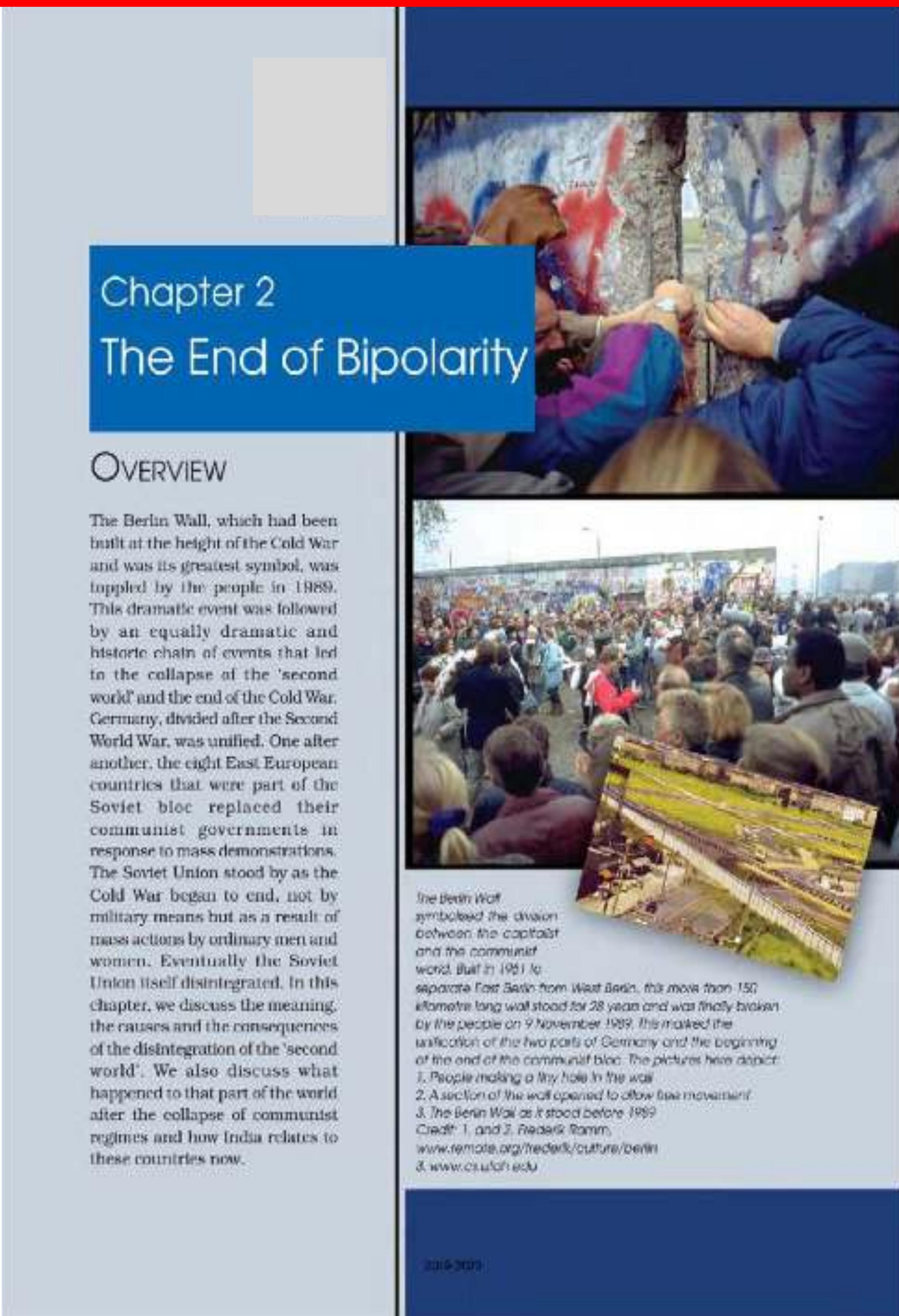

Chapter 2

The End of Bipolarity

OVERVIEW

The Berlin Wall, which had been built at the height of the Cold War and was its greatest symbol, was toppled by the people in 1989. This dramatic event was followed by an equally dramatic and historic chain of events that led to the collapse of the 'second world' and the end of the Cold War. Germany, divided after the Second World War, was unified. One after another, the eight East European countries that were part of the Soviet bloc replaced their communist governments in response to mass demonstrations. The Soviet Union stood by as the Cold War began to end, not by military means but as a result of mass actions by ordinary men and women. Eventually the Soviet Union itself disintegrated. In this chapter, we discuss the meaning, the causes and the consequences of the disintegration of the 'second world'. We also discuss what happened to that part of the world after the collapse of communist regimes and how India relates to these countries now.

The Berlin Wall symbolised the division between the capitalist and the communist world. Built in 1961 to separate East Berlin from West Berlin, this more than 150 kilometre long wall stood for 28 years and was finally broken by the people on 9 November 1989. This marked the unification of the two parts of Germany and the beginning of the end of the communist bloc. The pictures here depict:
1. People making a tiny hole in the wall
2. A section of the wall opened to allow free movement
3. The Berlin Wall as it stood before 1989
Credit: 1, and 2. Frederik Ramm, www.remote.org/frederik/culture/berlin
3. www.cs.utah.edu

शीतयुद्ध के सबसे सरगर्म दौर में बर्लिन-दीवार खड़ी की गई थी और यह दीवार शीतयुद्ध का सबसे बड़ा प्रतीक थी। 1989 में पूर्वी जर्मनी की आम जनता ने इस दीवार को गिरा दिया। इस नाटकीय घटना के बाद और भी नाटकीय तथा एतिहासिक घटनाक्रम सामने आया। इसकी परिणति दूसरी दुनिया के पतन और शीतयुद्ध की समाप्ति में हुई। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद विभाजित हो चुके जर्मनी का अब एकीकरण हो गया। सोवियत संघ के खेमे में शामिल पूर्वी यूरोप के आठ देशों ने एक-एक करके जनता के प्रदर्शनों को देखकर अपने साम्यवादी शासन को बदल डाला। शीतयुद्ध के अंत के समय सोवियत संघ को यह सब चुपचाप देखते रहना पड़ा। एसा किसी सैन्य मजबूरी से नहीं, बल्कि आम जनता की सामूहिक कार्रवाई के दबाव के कारण हुआ। अंत में स्वयं सोवियत संघ का विघटन हो गया। इस अध्याय में हम दूसरी दुनिया के विघटन के आशय, कारण और परिणामों के बारे में चर्चा करेंगे। हम यह भी चर्चा करेंगे कि सोवियत शासन के पतन के बाद दुनिया के इस हिस्से में क्या हुआ और अब इन देशों से भारत के रिश्ते कैसे हैं।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

OVERVIEW

The Berlin Wall, which had been built at the height of the Cold War and was its greatest symbol, was toppled by the people in 1989. This dramatic event was followed by an equally dramatic and historic chain of events that led to the collapse of the 'second world' and the end of the Cold War. Germany, divided after the Second World War, was unified. One after another, the eight East European countries that were part of the Soviet bloc replaced their communist governments in response to mass demonstrations. The Soviet Union stood by as the Cold War began to end, not by military means but as a result of mass actions by ordinary men and women. Eventually the Soviet Union itself disintegrated. In this chapter, we discuss the meaning, the causes and the consequences of the disintegration of the 'second world'. We also discuss what happened to that part of the world after the collapse of communist regimes and how India relates to these countries now.

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

LEADERS OF THE SOVIET UNION

Vladimir Lenin (1870-1924)
Founder of the Bolshevik Communist party; leader of the Russian Revolution of 1917 and the founder-head of the USSR during the most difficult period following the revolution (1917-1924); an outstanding theoretician and practitioner of Marxism and a source of inspiration for communists a
world.

सोवियत संघ के नेता

व्लादिमीर लेनिन (1870–1924)
बोल्शेविक कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक; 1917 की रूसी क्रांति के नायक और क्रांति के बाद के सबसे मुश्किल दौर (1917–1924) में सोवियत समाजवादी गणराज्य के संस्थापक–अध्यक्ष; मार्क्सवाद के असाधारण सिद्धांतकार और उसे अमली जामा पहनाने में महारथी; पूरी दुनिया में साम्यवाद के प्रेरणास्रोत।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

WHAT WAS THE SOVIET SYSTEM?

The Union of Soviet Socialist Republics (USSR) came into being after the socialist revolution in Russia in 1917. The revolution was inspired by the ideals of socialism, as opposed to capitalism, and the need for an egalitarian society. This was perhaps the biggest attempt in human history to abolish the institution of private property and consciously design a society based on principles of equality. In doing so, the makers of the Soviet system gave primacy to the state and the institution of the party. The Soviet political system centred around the communist party, and no other political party or opposition was allowed. The economy was planned

सोवियत प्रणाली क्या थी?

समाजवादी सोवियत गणराज्य (यू.एस.एस.आर.) रूस में हुई 1917 की समाजवादी क्रांति के बाद अस्तित्व में आया। यह क्रांति पूँजीवादी व्यवस्था के विरोध में हुई थी और समाजवाद के आदर्शों और समतामूलक समाज की ज़रूरत से प्रेरित थी। यह मानव इतिहास में निजी संपत्ति की संस्था को समाप्त करने और समाज को समानता के सिद्धांत पर सचेत रूप से रचने की सबसे बड़ी कोशिश थी। एसा करने में सोवियत प्रणाली के निर्माताओं ने राज्य और 'पार्टी की संस्था' को प्राथमिक महत्त्व दिया। सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी। इसमें किसी अन्य राजनीतिक दल या विपक्ष के लिए जगह नहीं थी। अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और राज्य के नियंत्रण में थी।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

After the Second World War, the east European countries that the Soviet army had liberated from the fascist forces came under the control of the USSR. The political and the economic systems of all these countries were modelled after the USSR. This group of countries was called the Second World or the 'socialist bloc'. The Warsaw Pact, a military alliance, held them together. The USSR was the leader of the bloc.

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पूर्वी यूरोप के देश सोवियत संघ के अंकुश में आ गये। सोवियत सेना ने इन्हें फासीवादी ताकतों के चंगुल से मुक्त कराया था। इन सभी देशों की राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था को सोवियत संघ की समाजवादी प्रणाली की तर्ज पर ढाला गया। इन्हें ही समाजवादी खेमे के देश या 'दूसरी दुनिया' कहा जाता है। इस खेमे का नेता समाजवादी सोवियत गणराज्य था।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The Soviet Union became a great power after the Second World War. The Soviet economy was then more developed than the rest of the world except for the US. It had a complex communications network, vast energy resources including oil, iron and steel, machinery production, and a transport sector that connected its remotest areas with efficiency

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ महाशक्ति के रूप में उभरा। अमरीका को छोड दें तो सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था शेष विश्व की तुलना में कहीं ज्यादा विकसित थी। सोवियत संघ की संचार प्रणाली बहुत उन्नत थी। उसके पास विशाल ऊर्जा–संसाधन था जिसमें खनिज–तेल, लोहा और इस्पात तथा मशीनरी उत्पाद शामिल हैं। सोवियत संघ के दूर–दराज के इलाके भी आवागमन की सुव्यवस्थित और विशाल प्रणाली के कारण आपस में जुड़े हुए थे।

It had a domestic consumer industry that produced everything from pins to cars, though their quality did not match that of the Western capitalist countries. The Soviet state ensured a minimum standard of living for all citizens, and the government subsidised basic necessities including health, education, childcare and other welfare schemes. There was no unemployment. State ownership was the dominant form of ownership: land and productive assets were owned and controlled by the Soviet state.

सोवियत संघ का घरेलू उपभोक्ता–उद्योग भी बहुत उन्नत था और पिन से लेकर कार तक सभी चीजों का उत्पादन वहां होता था। हालाँकि सोवियत संघ के उपभोक्ता उद्योग में बनने वाली वस्तुएँ गुणवत्ता के लिहाज से पश्चिमी देशों के स्तर की नहीं थीं लेकिन सोवियत संघ की सरकार ने अपने सभी नागरिकों के लिए एक न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित कर दिया था। सरकार बुनियादी ज़रूरत की चीजें मसलन स्वास्थ्य–सुविधा, शिक्षा, बच्चों की देखभाल तथा लोक–कल्याण की अन्य चीजें रियायती दर पर मुहैया कराती थी। बेरोजगारी नहीं थी। मिल्कियत का प्रमुख रूप राज्य का स्वामित्व था तथा भूमि और अन्य उत्पादक संपदाओं पर स्वामित्व होने के अलावा नियंत्रण भी राज्य का ही था।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The Soviet system, however, became very bureaucratic and authoritarian, making life very difficult for its citizens. Lack of democracy and the absence of freedom of speech stifled people who often expressed their dissent in jokes and cartoons. Most of the institutions of the Soviet state needed reform: the one-party system represented by the Communist Party of the Soviet Union had tight control over all institutions and was unaccountable to the people.

बहरहाल, सोवियत प्रणाली पर नौकरशाही का शिकंजा कसता चला गया। यह प्रणाली सत्तावादी होती गई और नागरिकों का जीवन कठिन होता चला गया। लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की आज़ादी नहीं होने के कारण लोग अपनी असहमति अक्सर चुटकुलों और कार्टूनों में व्यक्त करते थे। सोवियत संघ की अधिकांश संस्थाओं में सुधार की ज़रूरत थी। सोवियत संघ में एक दल यानी कम्युनिस्ट पार्टी का शासन था और इस दल का सभी संस्थाओं पर गहरा अंकुश था। यह दल जनता के प्रति जवाबदेह नहीं था।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The party refused to recognise the urge of people in the fifteen different republics that formed the Soviet Union to manage their own affairs including their cultural affairs. Although, on paper, Russia was only one of the fifteen republics that together constituted the USSR, in reality Russia dominated everything, and people from other regions felt neglected and often suppressed.

जनता ने अपनी संस्कृति और बाकी मामलों की साज–संभाल अपने आप करने के लिए 15 गणराज्यों को आपस में मिलाकर सोवियत संघ बनाया था। लेकिन पार्टी ने जनता की इस इच्छा को पहचानने से इंकार कर दिया। हालाँकि सोवियत संघ के नक्शे में रूस, संघ के पन्द्रह गणराज्यों में से एक था लेकिन वास्तव में रूस का हर मामले में प्रभुत्व था। अन्य क्षेत्रों की जनता अक्सर उपेक्षित और दमित महसूस करती थी।

The End of Bipolarity दो ध्ाुवीयता का अंत

In the arms race, the Soviet Union managed to match the US from time to time, but at great cost. The Soviet Union lagged behind the West in technology, infrastructure (e.g. transport, power), and most importantly, in fulfilling the political or economic aspirations of citizens. The Soviet invasion of Afghanistan in 1979 weakened the system even further. Though wages continued to grow, productivity and technology fell considerably behind that of the West. This led to shortages in all consumer goods. Food imports increased every year. The Soviet economy was faltering in the late 1970s and became stagnant.

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

हथियारों की होड में सोवियत संघ ने समय समय पर अमरीका को बराबर की टक्कर दी लेकिन उसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। सोवियत संघ प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढाँच (मसलन – परिवहन, ऊर्जा) के मामले में पश्चिमी देशों की तुलना में पीछे रह गया। लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह थी कि सोवियत संघ अपने नागरिकों की राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सका। सोवियत संघ ने 1979 में अफगानिस्तान में हस्तक्षेप किया। इससे सोवियत संघ की व्यवस्था और भी कमजोर हुई। हालाँकि सोवियत संघ में लोगों का पारिश्रमिक लगातार बढ़ा लेकिन उत्पादकता और प्रौद्योगिकी के मामले में वह पश्चिम के देशों से बहुत पीछे छूट गया। इससे हर तरह की उपभोक्ता – वस्तु की कमी हो गई। खाद्यान्न का आयात साल–दर–साल बढ़ता गया। 1970 के दशक के अंतिम वर्षों में यह व्यवस्था लडखड़ा रही थी और अंतत: ठहर सी गयी।

GORBACHEV AND THE DISINTEGRATION

Mikhail Gorbachev, who had become General Secretary of the Communist Party of the Soviet Union in 1985, sought to reform this system. Reforms were necessary to keep the USSR abreast of the information and technological revolutions taking place in the West. However, Gorbachev's decision to normalise relations with the West and democratise and reform the Soviet Union had some other effects that neither he nor anyone else intended or anticipated. The people in the East European countries which were part of the Soviet bloc started to protest against their own governments and Soviet control. Unlike in the past, the Soviet Union, under Gorbachev, did not intervene when the disturbances occurred, and the communist regimes collapsed one after another.

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

गोर्बाचेव और सोवियत संघ का विघटन मिख़ाइल गोर्बाचेव ने इस व्यवस्था को सुधारना चाहा। वे 1980 के दशक के मध्य में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने। पश्चिम के देशों में सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांति हो रही थी और सोवियत संघ को इसकी बराबरी में लाने के लिए सुधार ज़रूरी हो गए थे। गोर्बाचेव ने पश्चिम के देशों के साथ संबंधों को सामान्य बनाने, सोवियत संघ को लोकतांत्रिक रूप देने और वहां सुधार करने का फ़ैसला किया। इस फ़ैसले की कुछ एसी भी परिणतियां रहीं जिनका किसी को कोई अंदाजा नहीं था। पूर्वी यूरोप के देश सोवियत खेमे के हिस्से थे। इन देशों की जनता ने अपनी सरकारों और सोवियत नियंत्रण का विरोध करना शुरू कर दिया। गोर्बाचेव के शासक रहते सोवियत संघ ने एसी गड़बडियों में उस तरह का हस्तक्षेप नहीं किया जैसा अतीत में होता था। पूर्वी यूरोप की साम्यवादी सरकारें एक के बाद एक गिर गइं।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

These developments were accompanied by a rapidly escalating crisis within the USSR that hastened its disintegration. Gorbachev initiated the policies of economic and political reform and democratisation within the country. The reforms were opposed by leaders within the Communist Party

सोवियत संघ के बाहर हो रहे इन परिवर्तनों के साथ–साथ अंदर भी संकट गहराता जा रहा था और इससे सोवियत संघ के विघटन की गति और तेज हुई। गोर्बाचेव ने देश के अंदर आर्थिक–राजनीतिक सुधारों और लोकतंत्रीकरण की नीति चलायी। इन सुधार नीतियों का कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं द्वारा विरोध किया गया।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

A coup took place in 1991 that was encouraged by Communist Party hardliners. The people had tasted freedom by then and did not want the old-style rule of the Communist Party. Boris Yeltsin emerged as a national hero in opposing this coup. The Russian Republic, where Yeltsin won a popular election, began to shake off centralised control.

1991 में एक तख़्तापलट भी हुआ। कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े गरमपंथियों ने इसे बढ़ावा दिया था। तब तक जनता को स्वतंत्रता का स्वाद मिल चुका था और वे कम्युनिस्ट पार्टी के पुरानी रंगत वाले शासन में नहीं जाना चाहते थे। यल्तसिन ने इस तख़्तापलट के विरोध में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और वे नायक की तरह उभरे। रूसी गणराज्य ने, जहाँ बोरिस यल्तसिन ने आम चुनाव जीता था, केंद्रीकृत नियंत्रण को मानने से इंकार कर दिया।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Power began to shift from the Soviet centre to the republics, especially in the more Europeanised part of the Soviet Union, which saw themselves as sovereign states. The Central Asian republics did not ask for independence and wanted to remain with the Soviet Federation.

सत्ता मास्को से गणराज्यों की तरफ खिसकने लगी। ऐसा ख़ासकर सोवियत संघ के उन भागों में हुआ जो ज्यादा यूरोपीकृत थे और अपने को संप्रभु राज्य मानते थे। आश्चर्यजनक तौर पर मध्य–एशियाई गणराज्यों ने अपने लिए स्वतंत्रता की माँग नहीं की। वे 'सोवियत संघ' के साथ ही रहना चाहते थे।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

In December 1991, under the leadership of Yeltsin, Russia, Ukraine and Belarus, three major republics of the USSR, declared that the Soviet Union was disbanded. The Communist Party of the Soviet Union was banned. Capitalism and democracy were adopted as the bases for the post-Soviet republics.

सन् 1991 के दिसम्बर में यल्तसिन के नेतृत्व में सोवियत संघ के तीन बडे गणराज्य रूस, यूक्रेन और बेलारूस ने सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा की। कम्युनिस्ट पार्टी प्रतिबंधित हो गई और परवर्ती सोवियत गणराज्यों ने पूँजीवाद तथा लोकतंत्र को अपना आधार बनाया।

The End of Bipolarity दो धा्रुवीयता का अंत

The declaration on the disintegration of the USSR and the formation of the Commonwealth of Independent States (CIS) came as a surprise to the other republics, especially to the Central Asian ones. The exclusion of these republics was an issue that was quickly solved by making them founding members of the CIS. Russia was now accepted as the successor state of the Soviet Union. It inherited the Soviet seat in the UN Security Council. Russia accepted all the international treaties and commitments of the Soviet Union. It took over as the only nuclear state of the postSoviet space and carried out some nuclear disarmament measures with the US. The old Soviet Union was thus dead and buried.

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

साम्यवादी सोवियत गणराज्य के विघटन की घोषणा और स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल (कॉमनवेल्थ ऑव इंडिपेंडेंट स्टेट्स) का गठन बाकी गणराज्यों, खासकर मध्य एशियाई गणराज्यों के लिए बहुत आश्चर्यचकित करने वाला था। ये गणराज्य अभी 'स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल' से बाहर थे। इस मुद्दे को तुरंत हल कर लिया गया। इन्हें 'राष्ट्रकुल' का संस्थापक सदस्य बनाया गया। रूस को सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य स्वीकार किया गया। रूस को सुरक्षा परिषद् में सोवियत संघ की सीट मिली। सोवियत संघ ने जो अंतर्राष्ट्रीय करार और संधियाँ की थीं उन सब को निभाने का जिम्मा अब रूस का था। सोवियत संघ के विघटन के बाद के समय में पूर्ववर्ती गणराज्यों के बीच एकमात्र परमाणु शक्ति संपन्न देश का दर्ज़ा रूस को मिला। उसने अमरीका के साथ परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में कुछ कदम भी उठाए। सोवियत संघ अब नहीं रहा; वह दफ़न हो चुका था।

WHY DID THE SOVIET UNION DISINTEGRATE?

How did the second most powerful country in the world suddenly disintegrate? This is a question worth asking not just to understand the Soviet Union and the end of communism but also because it is not the first and may not be the last political system to collapse. While there are unique features of the Soviet collapse, there may be more general lessons to be drawn from this very important case.

सोवियत संघ का विघटन क्यों हुआ?

विश्व की दूसरी सबसे बड़ी महाशक्ति अचानक कैसे बिखर गई? सिर्फ़ सोवियत संघ और साम्यवाद के अंत को समझने के लिए ही यह सवाल पूछना ज़रूरी नहीं। यह सवाल किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के पतन को समझने के लिए ज़रूरी है क्योंकि सोवियत संघ के रूप में न तो कोई राज–व्यवस्था पहली बार टूटी है और न ही आखिरी बार। सोवियत संघ के विघटन के कुछ विशेष कारण ज़रूर हो सकते हैं लेकिन इस मामले से हम एक सर्व–सामान्य सबक सीख सकते हैं।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

There is no doubt that the internal weaknesses of Soviet political and economic institutions, which failed to meet the aspirations of the people, were responsible for the collapse of the system. Economic stagnation for many years led to severe consumer shortages and a large section of Soviet society began to doubt and question the system and to do so openly.

इसमें कोई संदेह नहीं है कि सोवियत संघ की राजनीतिक–आर्थिक संस्थाएँ अंदरुनी कमजोरी के कारण लोगों की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकीं। यही सोवियत संघ के पतन का कारण रहा। कई सालों तक अर्थव्यवस्था गतिरुद्ध रही। इससे उपभोक्ता–वस्तुओं की बड़ी कमी हो गई और सोवियत संघ की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपनी राजव्यवस्था को शक की नज़र से देखने लगा; उस पर खुलेआम सवाल खड़े करने शुरू किए।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Why did the system become so weak and why did the economy stagnate? The answer is partially clear. The Soviet economy used much of its resources in maintaining a nuclear and military arsenal and the development of its satellite states in Eastern Europe and within the Soviet system (the five Central Asian Republics in particular). This led to a huge economic burden that the system could not cope with. At the same time, ordinary citizens became more knowledgeable about the economic advance of the West. They could see the disparities between their system and the systems of the West. After years of being told that the Soviet system was better than Western capitalism, the reality of its backwardness came as a political and psychological shock.

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

यह व्यवस्था इतनी कमज़ोर कैसे हुई और अर्थव्यवस्था में गतिरोध क्यों आया? इसका उत्तर काफी हद तक साफ है। इस सिलसिले में एक बात एकदम स्पष्ट है कि सोवियत संघ ने अपने संसाधनों का अधिकांश परमाणु हथियार और सैन्य साजो–सामान पर लगाया। उसने अपने संसाधन पूर्वी यूरोप के अपने पिछलग्गू देशों के विकास पर भी खर्च किए ताकि वे सोवियत नियंत्रण में बने रहें। इससे सोवियत संघ पर गहरा आर्थिक दबाब बना और सोवियत व्यवस्था इसका सामना नही कर सकी। इसी के साथ एक और बात हुई। पश्चिमी मुल्कों की तरक्की के बारे में सोवियत संघ के आम नागरिकों की जानकारी बढ़ी वे अपनी राजव्यवस्था और पश्चिमी देशों की राजव्यवस्था के बीच मौजूद अंतर भांप सकते थे। सालों से इन लोगों को बताया जा रहा था कि सोवियत राजव्यवस्था पश्चिम के पूँजीवाद से बेहतर है लेकिन सच्चाई यह थी कि सोवियत संघ पिछड चुका था और अपने पिछड़ेपन की पहचान से लोगों को राजनीतिक–मनोवैज्ञानिक रूप से धक्का लगा।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The Soviet Union had become stagnant in an administrative and political sense as well. The Communist Party that had ruled the Soviet Union for over 70 years was not accountable to the people. Ordinary people were alienated by slow and stifling administration, rampant corruption, the inability of the system to correct mistakes it had made, the unwillingness to allow more openness in government, and the centralisation of authority in a vast land. Worse still, the party bureaucrats gained more privileges than ordinary citizens. People did not identify with the system and with the rulers, and the government increasingly lost popular backing.

सोवियत संघ प्रशासनिक और राजनीतिक रूप से गतिरुद्ध हो चुका था। सोवियत संघ पर कम्युनिस्ट पार्टी ने 70 सालों तक शासन किया और यह पार्टी अब जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रह गई थी। गतिरुद्ध प्रशासन, भारी भ्रष्टाचार और अपनी ग़लतियों को सुधारने में व्यवस्था की अक्षमता, शासन में ज्यादा खुलापन लाने के प्रति अनिच्छा और देश की विशालता के बावजूद सत्ता का केंद्रीकृत होना – इन सारी बातों के कारण आम जनता अलग-थलग पड गई। इससे भी बुरी बात यह थी कि 'पार्टी' के अधिकारियों को आम नागरिक से ज्यादा विशेषाधिकार मिले हुए थे। लोग अपने को राजव्यवस्था और शासकों से जोड़कर नहीं देख पा रहे थे और सरकार का जनाधार खिसकता चला गया।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Gorbachev's reforms promised to deal with these problems. Gorbachev promised to reform the economy, catch up with the West, and loosen the administrative system. You may wonder why the Soviet Union collapsed in spite of Gorbachev's accurate diagnosis of the problem and his attempt to implement reforms. Here is where the answers become more controversial, and we have to depend on future historians to guide us better

मिख़ाइल गोर्बाचेव के सुधारों में इन दोनों समस्याओं के समाधान का वायदा था। गोर्बाचेव ने अर्थव्यवस्था को सुधारने, पश्चिम की बराबरी पर लाने और प्रशासनिक ढाँच में ढोल देने का वायदा किया। गोर्बाचेव तो रोग का ठीक–ठीक निदान कर रहे थे और सुधारों को लागू करने का उनका प्रयास भी ठीक था – एसे में आपको आश्चर्य हो सकता है कि फिर सोवियत संघ टूटा क्यों? इस बिंदु पर आकर उत्तर ज्यादा विवादित हो जाते हैं। इस स्थिति को हमें आगे के इतिहासकार शायद ज्यादा बेहतर ढंग से समझा पाएं।

The most basic answer seems to be that when Gorbachev carried out his reforms and loosened the system, he set in motion forces and expectations that few could have predicted and became virtually impossible to control. There were sections of Soviet society which felt that Gorbachev should have moved much faster and were disappointed and impatient with his methods. They did not benefit in the way they had hoped, or they benefited too slowly. Others, especially members of the Communist Party and those who were served by the system, took exactly the opposite view. They felt that their power and privileges were eroding and Gorbachev was moving too quickly. In this 'tug of war', Gorbachev lost support on all sides and divided public opinion. Even those who were with him became disillusioned as they felt that he did not adequately defend his own

The End of Bipolarity दो धा्रुवीयता का अंत

सबसे सटीक उत्तर तो यह जान पड़ता है कि जब गोर्बाचेव ने सुधारों को लागू किया और व्यवस्था में ढोल दी तो लोगों की आकांक्षाओं–अपेक्षाओं का एसा ज्वार उमड़ा जिसका अनुमान शायद ही कोई लगा सकता था। इस पर काबू पाना एक अर्थ में असंभव हो गया। सोवियत संघ में जनता के एक तबके की सोच यह थी कि गोर्बाचेव को ज्यादा तेज गति से कदम उठाने चाहिए। ये लोग उनकी कार्यपद्धति से धोरज खो बैठे और निराश हो गए। इन लोगों ने जैसा सोचा था वैसा फायदा उन्हें नहीं हुआ या संभव है उन्हें बहुत धोमी गति से फायदा हो रहा हो। जनता के एक हिस्से ख़ासकर, कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य और वे लोग जो सोवियत व्यवस्था से फायदे में थे, के विचार ठीक इसके विपरीत थे। इनका कहना था कि हमारी सत्ता और विशेषाधिकार अब कम हो रहे हैं और गोर्बाचेव बहुत जल्दबाजी दिखा रहे हैं। इस खींचतान में गोर्बाचेव का समर्थन हर तरफ से जाता रहा और जनमत आपस में बँट गया। जो लोग उनके साथ थे उनका भी मोहभंग हुआ। एसे लोगों ने सोचा कि गोर्बाचेव खुद अपनी ही नीतियों का ठीक तरह से बचाव नहीं कर पा रहे हैं।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

All this might not have led to the collapse of the Soviet Union but for another development that surprised most observers and indeed many insiders. The rise of nationalism and the desire for sovereignty within various republics including Russia and the Baltic Republics (Estonia, Latvia and Lithuania), Ukraine, Georgia, and others proved to be the final and most immediate cause for the disintegration of the USSR. Here again there are differing views.

इन सारी बातों के बावजूद संभवतः सोवियत संघ का विघटन न होता। लेकिन, एक घटना ने अधिकांश पर्यवेक्षकों को चौंकाया और सोवियत व्यवस्था के अंदर के लोग भी इससे दंग रह गए। यह घटना थी राष्ट्रवादी भावनाओं और संप्रभुता की इच्छा के उभार की। रूस और बाल्टिक गणराज्य (एस्टोनिया, लताविया और लिथुआनिया), उक्रेन तथा जार्जिया जैसे सोवियत संघ के विभिन्न गणराज्य इस उभार में शामिल थे। राष्ट्रीयता और संप्रभुता के भावों का उभार सोवियत संघ के विघटन का अंतिम और सर्वाधिक तात्कालिक कारण सिद्ध हुआ। इस मसले पर भी अलग-अलग राय मिलती है।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

One view is that nationalist urges and feelings were very much at work throughout the history of the Soviet Union and that whether or not the reforms had occurred there would have been an internal struggle within the Soviet Union. This is a 'what-if' of history, but surely it is not an unreasonable view given the size and diversity of the Soviet Union and its growing internal problems. Others think that Gorbachev's reforms speeded up and increased nationalist dissatisfaction to the point that the government and rulers could not control it.

एक विचार तो यह है कि राष्ट्रीयता की भावना और तड़प सोवियत संघ के समूचे इतिहास में कहीं–न–कहीं जारी थी और चाहे सुधार होते या न होते, सोवियत संघ में अंदरूनी संघर्ष होना ही था। खैर! यह तो इतिहास की अनिवार्यता के बारे में अनुमान लगाना हुआ लेकिन सोवियत संघ के आकार, विविधता तथा इसकी बढ़ती हुई आंतरिक समस्याओं को देखते हुए ऐसा सोचना असंगत भी नहीं है। कुछ अन्य लोग सोचते हैं कि गोर्बाचेव के सुधारों ने राष्ट्रवादियों के असंतोष को इस सीमा तक भड़काया कि उस पर शासकों का नियंत्रण नहीं रहा।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Ironically, during the Cold War many thought that nationalist unrest would be strongest in the Central Asian republics given their ethnic and religious differences with the rest of the Soviet Union and their economic backwardness. However, as things turned out, nationalist dissatisfaction with the Soviet Union was strongest in the more "European" and prosperous part – in Russia and the Baltic areas as well as Ukraine and Georgia. Ordinary people here felt alienated from the Central Asians and from each other and concluded also that they were paying too high an economic price to keep the more backward areas within the Soviet Union.

विडंबना यह है कि शीतयुद्ध के दौरान बहुत–से लोग सोचते थे कि सोवियत संघ के मध्य–एशियाई गणराज्यों में राष्ट्रवादी आकांक्षाओं का उभार सबसे दमदार होगा क्योंकि ये गणराज्य रूस से धार्मिक और नस्ली लिहाज से अलग और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए थे। लेकिन हुआ यह कि सोवियत संघ के प्रति राष्ट्रवादी असंतोष यूरोपीय और अपेक्षाकृत समृद्ध गणराज्यों – रूस, उक्रेन, जार्जिया और बाल्टिक क्षेत्र में सबसे प्रबल नज़र आया। यहां के आम लोग अपने को मध्य एशियाई गणराज्यों के लोगों से अलग–थलग महसूस कर रहे थे। इनका आपस में भी अलगाव था। इन गणराज्यों के लोगों में यह भाव घर कर गया कि ज्यादा पिछड़े इलाकों को सोवियत संघ में शामिल रखने की उन्हें भारी कीमत चुकानी पड रही है।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

CONSEQUENCES OF DISINTEGRATION

The collapse of the second world of the Soviet Union and the socialist systems in eastern Europe had profound consequences for world politics. Let us note here three broad kinds of enduring changes that resulted from it. Each of these had a number of effects that we cannot list here.

विघटन की परिणतियां

सोवियत संघ की 'दूसरी दुनिया' और पूर्वी यूरोप की समाजवादी व्यवस्था के पतन के परिणाम विश्व राजनीति के लिहाज से गंभीर रहे। इससे मोटे तौर पर तीन प्रकार के दूरगामी परिवर्तन हुए। हर परिवर्तन के बहुत सारे प्रभाव हुए। उन सभी प्रभावों को यहां सूचीबद्ध करना उचित नहीं होगा।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

First of all, it meant the end of Cold War confrontations. The ideological dispute over whether the socialist system would beat the capitalist system was not an issue any more. Since this dispute had engaged the military of the two blocs, had triggered a massive arms race and accumulation of nuclear weapons, and had led to the existence of military blocs, the end of the confrontation demanded an end to this arms race and a possible new peace.

अव्वल तो 'दूसरी दुनिया' के पतन का एक परिणाम शीतयुद्ध के दौर के संघर्ष की समाप्ति में हुआ। समाजवादी प्रणाली पूँजीवादी प्रणाली को पछाड पाएगी या नहीं – यह विचारधारात्मक विवाद अब कोई मुद्दा नहीं रहा। शीतयुद्ध के इस विवाद ने दोनों गुटों की सेनाओं को उलझाया था, हथियारों की तेज होड शुरू की थी, परमाणु हथियारों के संचय को बढ़ावा दिया था तथा विश्व को सैन्य गुटों में बाँटा था। शीतयुद्ध के समाप्त होने से हथियारों की होड भी समाप्त हो गई और एक नई शांति की संभावना का जन्म हुआ।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Second, power relations in world politics changed and, therefore, the relative influence of ideas and institutions also changed. The end of the Cold War left open only two possibilities: either the remaining superpower would dominate and create a unipolar system, or different countries or groups of countries could become important players in the international system, thereby bringing in a multipolar system where no one power could dominate. As it turned out, the US became the sole superpower. Backed by the power and prestige of the US, the capitalist economy was now the dominant economic system internationally. Institutions like the World Bank and International Monetary Fund became powerful advisors to all these countries since they gave them loans for their transitions to capitalism. Politically, the notion of liberal democracy emerged as the best way to organise political life.

The End of Bipolarity दो धा्रुवीयता का अंत

दूसरा यह कि विश्व राजनीति में शक्ति–संबंध बदल गए और इस कारण विचारों और संस्थाओं के आपेक्षिक प्रभाव में भी बदलाव आया। शीतयुद्ध के अंत के समय केवल दो संभावनाएँ थीं– या तो बची हुई महाशक्ति का दबदबा रहेगा और एकध्,वीय विश्व बनेगा या फिर कई देश अथवा देशों के अलग–अलग समूह अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण मोहरे बनकर उभरेंगे और इस तरह बहुध्,वीय विश्व बनेगा जहां किसी एक देश का बोलबाला नहीं होगा। हुआ यह कि अमरीका अकेली महाशक्ति बन बैठा। अमरीका की ताकत और प्रतिष्ठा की शह पाने से अब पूँजीवादी अर्थव्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभुत्वशाली अर्थव्यवस्था है। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएँ विभिन्न देशो की ताकतवर सलाहकार बन गइं क्योंकि इन देशों को पूँजीवाद की ओर कदम बढ़ान के लिए इन संस्थाओं ने कर्ज़ दिया है। राजनीतिक रूप से उदारवादी लोकतंत्र राजनीतिक जीवन को सूत्रबद्ध करने की सर्वश्रेष्ठ धारणा के रूप में उभरा है।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Third, the end of the Soviet bloc meant the emergence of many new countries. All these countries had their own independent aspirations and choices. Some of them, especially the Baltic and east European states, wanted to join the European Union and become part of the North Atlantic Treaty Organisation (NATO). The Central Asian countries wanted to take advantage of their geographical location and continue their close ties with Russia and also to establish ties with the West, the US, China and others. Thus, the international system saw many new players emerge, each with its own identity, interests, and economic and political difficulties. It is to these issues that we now turn

तीसरी बात यह कि सोवियत खेमे के अंत का एक अर्थ था नए देशों का उदय। इन सभी देशों की स्वतंत्र पहचान और पसंद है। इनमें से कुछ देश, ख़ासकर बाल्टिक और पूर्वी यूरोप के देश 'यूरोपीय संघ' से जुड़ना और उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) का हिस्सा बनना चाहते थे। मध्य एशियाई देश अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति का फायदा उठाना चाहते थे। इन देशों ने रूस के साथ अपने मजबूत रिश्ते को जारी रखा और पश्चिमी देशों, अमरीका, चीन तथा अन्य देशों के साथ संबंध बनाए। इस तरह अंतर्राष्ट्रीय फलक पर कई नए खिलाड़ी सामने आये। हरेक के हित, पहचान और आर्थिक-राजनीतिक समस्याएँ अलग-अलग थीं। आगे इन्हीं मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

SHOCK THERAPY IN POST-COMMUNIST REGIMES

The collapse of communism was followed in most of these countries by a painful process of transition from an authoritarian socialist system to a democratic capitalist system. The model of transition in Russia, Central Asia and east Europe that was influenced by the World Bank and the IMF came to be known as 'shock therapy'. Shock therapy varied in intensity and speed amongst the former second world countries, but its direction and features were quite similar.

साम्यवादी शासन के बाद 'शॉक थेरेपी'

साम्यवाद के पतन के बाद पूर्व सोवियत संघ के गणराज्य एक सत्तावादी, समाजवादी व्यवस्था से लोकतांत्रिक पूँजीवादी व्यवस्था तक के कष्टप्रद संक्रमण से होकर गुजरे। रूस, मध्य एशिया के गणराज्य और पूर्वी यूरोप के देशों में पूँजीवाद की ओर संक्रमण का एक खास मॉडल अपनाया गया। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा निर्देशित इस मॉडल को 'शॉक थेरेपी' (आघात पहुँचाकर उपचार करना) कहा गया। भूतपूर्व 'दूसरी दुनिया' के देशों में शॉक थेरेपी की गति और गहनता अलग-अलग रही लेकिन इसकी दिशा और चरित्र बड़ी सीमा तक एक जैसे थे।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Each of these countries was required to make a total shift to a capitalist economy, which meant rooting out completely any structures evolved during the Soviet period. Above all, it meant that private ownership was to be the dominant pattern of ownership of property. Privatisation of state assets and corporate ownership patterns were to be immediately brought in. Collective farms were to be replaced by private farming and capitalism in agriculture. This transition ruled out any alternate or 'third way', other than state-controlled socialism

हर देश को पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर पूरी तरह मुड़ना था। इसका मतलब था सोवियत संघ के दौर की हर संरचना से पूरी तरह निजात पाना। 'शॉक थेरेपी' की सर्वोपरि मान्यता थी कि मिल्कियत का सबसे प्रभावी रूप निजी स्वामित्व होगा। इसके अंतर्गत राज्य की संपदा के निजीकरण और व्यावसायिक स्वामित्व के ढाँचे को तुरंत अपनाने की बात शामिल थी। सामूहिक 'फार्म' को निजी 'फार्म' में बदला गया और पूँजीवादी पद्धति से खेती शुरू हुई। इस संक्रमण में राज्य नियंत्रित समाजवाद या पूँजीवाद के अतिरिक्त किसी भी वैकल्पिक व्यवस्था या 'तीसरे रुख़' को मंजूर नहीं किया गया।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Shock therapy also involved a drastic change in the external orientation of these economies. Development was now envisaged through more trade, and thus a sudden and complete switch to free trade was considered essential. The free trade regime and foreign direct investment (FDI) were to be the main engines of change. This also involved openness to foreign investment, financial opening up or deregulation, and currency convertibility.

'शॉक थेरेपी' से इन अर्थव्यवस्थाओं के बाहरी व्यवस्थाओं के प्रति रुझान बुनियादी तौर पर बदल गए। अब माना जाने लगा कि ज्यादा से ज्यादा व्यापार करके ही विकास किया जा सकता है। इस कारण 'मुक्त व्यापार' को पूर्ण रूप से अपनाना ज़रूरी माना गया। पूँजीवादी व्यवस्था को अपनाने के लिए वित्तीय खुलापन, मुद्राओं की आपसी परिवर्तनीयता और मुक्त व्यापार की नीति महत्त्वपूर्ण मानी गई।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Finally, the transition also involved a break up of the existing trade alliances among the countries of the Soviet bloc. Each state from this bloc was now linked directly to the West and not to each other in the region. These states were thus to be gradually absorbed into the Western economic system. The Western capitalist states now became the leaders and thus guided and controled the development of the region through various agencies and organisations.

अंततः इस संक्रमण में सोवियत खेमे के देशों के बीच मौजूद व्यापारिक गठबंधना को समाप्त कर दिया गया। खेमे के प्रत्येक देश को एक–दूसरे से जोड़ने की जगह सीधे पश्चिमी मुल्कों से जोड़ा गया। इस तरह धोरे–धोरे इन देशों को पश्चिमी अर्थतंत्र में समाहित किया गया। पश्चिमी दुनिया के पूँजीवादी देश अब नेता की भूमिका निभाते हुए अपनी विभिन्न एजेंसियों और संगठनों के सहारे इस खेमे के देशों के विकास का मार्गदर्शन और नियंत्रण करेंगे।

CONSEQUENCES OF SHOCK THERAPY

The shock therapy administered in the 1990s did not lead the people into the promised utopia of mass consumption. Generally, it brought ruin to the economies and disaster upon the people of the entire region. In Russia, the large state-controlled industrial complex almost collapsed, as about 90 per cent of its industries were put up for sale to private individuals and companies.

'शॉक थेरेपी' के परिणाम

1990 में अपनायी गई 'शॉक थेरेपी' जनता को उपभोग के उस 'आनंदलोक' तक नहीं ले गई जिसका उसने वादा किया था। अमूमन 'शॉक थेरेपी' से पूरे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो गई और इस क्षेत्र की जनता को बर्बादी की मार झलनी पड़ी। रूस में, पूरा का पूरा राज्य-नियंत्रित औद्योगिक ढाँचा चरमरा उठा। लगभग 90 प्रतिशत उद्योगों को निजी हाथों या कंपनियों को बेचा गया।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Since the restructuring was carried out through market forces and not by government-directed industrial policies, it led to the virtual disappearance of entire industries. This was called 'the largest garage sale in history', as valuable industries were undervalued and sold at throwaway prices. Though all citizens were given vouchers to participate in the sales, most citizens sold their vouchers in the black market because they needed the money.

आर्थिक ढाँचे का यह पुनर्निर्माण चूँकि सरकार द्वारा निर्देशित औद्योगिक नीति के बजाय बाज़ार की ताकतें कर रही थीं, इसलिए यह कदम सभी उद्योगों को मटियामेट करने वाला साबित हुआ। इसे 'इतिहास की सबसे बड़ी गराज–सेल' के नाम से जाना जाता है क्योंकि महत्त्वपूर्ण उद्योगों की कीमत कम से कम करके आंकी गई और उन्हें औने–पौने दामों में बेच दिया गया। हालाँकि इस महा–बिक्री में भाग लेने के लिए सभी नागरिकों को अधिकार–पत्र दिए गए थे, लेकिन अधिकांश नागरिकों ने अपने अधिकार–पत्र कालाबाजारियों के हाथों बेच दिये क्योंकि उन्हें धन की ज़रूरत थी।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The value of the ruble, the Russian currency, declined dramatically. The rate of inflation was so high that people lost all their savings. The collective farm system disintegrated leaving people without food security, and Russia started to import food. The real GDP of Russia in 1999 was below what it was in 1989. The old trading structure broke down with no alternative in its place.

रूसी मुद्रा रूबल के मूल्य में नाटकीय ढंग से गिरावट आई। मुद्रास्फीति इतनी ज्यादा बढ़ी कि लोगों की जमापूँजी जाती रही सामूहिक खेती की प्रणाली समाप्त हो चुकी थी और लोगों को अब खाद्यान्न की सुरक्षा मौजूद नहीं रही। रूस ने खाद्यान्न का आयात करना शुरू किया। सन् 1999 में वास्तविक 'सकल घरेलू उत्पाद' 1989 की तुलना में कहीं नीचे था। पुराना व्यापारिक ढाँचा तो टूट चुका था लेकिन इसकी जगह कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं हो पायी थी।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The old system of social welfare was systematically destroyed. The withdrawal of government subsidies pushed large sections of the people into poverty. The middle classes were pushed to the periphery of society, and the academic and intellectual manpower disintegrated or migrated. A mafia emerged in most of these countries and started controlling many economic activities. Privatisation led to new disparities. Post-Soviet states, especially Russia, were divided between rich and poor regions. Unlike the earlier system, there was now great economic inequality between people.

समाज कल्याण की पुरानी व्यवस्था को क्रम से नष्ट किया गया। सरकारी रियायतों के खात्मे के कारण ज्यादातर लोग ग़रीबी में पड गए। मध्य वर्ग समाज के हाशिए पर आ गया और अकादमिक– बौद्धिक कामों से जुड़े लोग या तो बिखर गए या बाहर चले गए। कई देशों में एक 'माफिया वर्ग' (जरायमपेशा लोग) उभरा और उसने अधिकतर आर्थिक गतिविधियों को अपने नियंत्रण में ले लिया। निजीकरण ने नई विषमताओं को जन्म दिया। पूर्व सोवियत संघ में शामिल रहे गणराज्यों और खासकर रूस में अमीर और गरीब लोगों के बीच तीखा विभाजन हो गया। पहले की व्यवस्था के विपरीत, अब धनी और निर्धन लोगों के बीच बहुत गहरी आर्थिक असमानता थी।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The construction of democratic institutions was not given the same attention and priority as the demands of economic transformation. The constitutions of all these countries were drafted in a hurry and most, including Russia, had a strong executive president with the widest possible powers that rendered elected parliaments relatively weak. In Central Asia, the presidents had great powers, and several of them became very authoritarian.

आर्थिक बदलाव को बड़ी प्राथमिकता दी गई और उस पर पर्याप्त ध्यान भी दिया गया लेकिन लोकतांत्रिक संस्थाओं के निर्माण का कार्य एसी प्राथमिकता के साथ नहीं हो सका। इन सभी देशों के संविधान हड़बड़ी में तैयार किए गए। रूस सहित अधिकांश देशों में राष्ट्रपति को कार्यपालिका प्रमुख बनाया गया और उसके हाथ में लगभग हरसंभव शक्ति थमा दी गई। फलस्वरूप संसद अपेक्षाकृत कमजोर संस्था रह गई। मध्य एशिया के देशों में राष्ट्रपति को बहुत अधिक शक्तियां प्राप्त थीं और इनमें से कुछ सत्तावादी हो गए।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

For example, the presidents of Turkmenistan and Uzbekistan appointed themselves to power first for ten years and then extended it for another ten years. They allowed no dissent or opposition. A judicial culture and independence of the judiciary was yet to be established in most of these countries.

मिसाल के तौर पर तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपतियों ने पहले 10 वर्षों के लिए अपने को इस पद पर बहाल किया और इसके बाद समय–सीमा को अगले 10 सालों के लिए बढ़ा दिया। इन राष्ट्रपतियों ने अपने फैसलों से असहमति या विरोध की अनुमति नहीं दी। अधिकतर देशों में न्यायिक संस्कृति और न्यायपालिका की स्वतंत्रता को स्थापित करने का काम करना अभी भी बाकी है।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Most of these economies, especially Russia, started reviving in 2000, ten years after their independence. The reason for the revival for most of their economies was the export of natural resources like oil, natural gas and minerals. Azerbaijan, Kazakhstan, Russia, Turkmenistan and Uzbekistan are major oil and gas producers. Other countries have gained because of the oil pipelines that cross their territories for which they get rent. Some amount of manufacturing has restarted.

रूस सहित अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था ने सन् 2000 में यानी अपनी आज़ादी के 10 साल बाद खड़ा होना शुरू किया। इन अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था के पुनर्जीवन का कारण था खनिज – तेल, प्राकृतिक गैस और धातु जैसे प्राकृतिक संसाधनों का निर्यात। रूस, कज़ाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान और अज़रबैजान तेल और गैस के बड़े उत्पादक देश हैं। बाकी देशों को अपने क्षेत्र से तेल की पाईप–लाइन गुजरने के कारण फायदा हुआ। इस एवज में इन्हें किराया मिलता है। एक हद तक विनिर्माण का काम भी फिर शुरू हुआ।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

TENSIONS AND CONFLICTS

Most of the former Soviet Republics are prone to conflicts, and many have had civil wars and insurgencies. Complicating the picture is the growing involvement of outside powers.
In Russia, two republics, Chechnya and Dagestan, have had violent secessionist movements. Moscow's method of dealing with the Chechen rebels and indiscriminate military bombings have led to many human rights violations but failed to deter the aspirations for

संघर्ष और तनाव

पूर्व सोवियत संघ के अधिकांश गणराज्य संघर्ष की आशंका वाले क्षेत्र हैं। अनेक गणराज्यों ने गृहयुद्ध और बग ावत को झला है। इसके साथ–साथ इन देशों में बाहरी ताकतों की दखल भी बढ़ी है। इससे स्थिति और भी जटिल हुई है।

रूस के दो गणराज्यों चेचन्या और दाग़िस्तान में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चले। मास्को ने चेचन विद्रोहियों से निपटने के जो तरीके अपनाये और जिस ग़ैर–जिम्मेदार तरीके से सैन्य बमबारी की उसमें मानवाधिकार का व्यापक उल्लंघन हुआ लेकिन इससे आज़ादी की आवाज दबायी नहीं जा सकी।

The End of Bipolarity दो धा्रुवीयता का अंत

In Central Asia, Tajikistan witnessed a civil war that went on for ten years till 2001. The region as a whole has many sectarian conflicts. In Azerbaijan's province of Nagorno-Karabakh, some local Armenians want to secede and join Armenia. In Georgia, the demand for independence has come from two provinces, resulting in a civil war. There are movements against the existing regimes in Ukraine, Kyrgyzstan and Georgia. Countries and provinces are fighting over river waters. All this has led to instability, making life difficult for the ordinary citizen.

मध्य एशिया में, तज़िकिस्तान दस वर्षों यानी 2001 तक गृहयुद्ध की चपेट में रहा। इस पूरे क्षेत्र में कई सांप्रदायिक संघर्ष चल रहे हैं। अज़रबैज़ान का एक प्रांत नगरनों कराबाख है। यहां के कुछ स्थानीय अर्मेनियाई अलग होकर अर्मेनिया से मिलना चाहते हैं। जार्जिया में दो प्रांत स्वतंत्रता चाहते हैं और गृहयुद्ध लड रहे हैं। यूक्रेन, किरगिझस्तान तथा जार्जिया में मौजूदा शासन को उखाड फेकने के लिए आंदोलन चल रहे हैं। कई देश और प्रांत नदी–जल के सवाल पर आपस में भिड़े हुए हैं। इन सारी बातों की वज़ह से अस्थिरता का माहौल है और आम नागरिक का जीवन दूभर है।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

The Central Asian Republics are areas with vast hydrocarbon resources, which have brought them economic benefit. Central Asia has also become a zone of competition between outside powers and oil companies. The region is next to Russia, China, Afghanistan, and Pakistan, and close to West Asia. After 11 September 2001,

मध्य एशियाई गणराज्यों में हाइड्रोकार्बनिक (पेट्रोलियम) संसाधनों का विशाल भंडार है। इससे इन गणराज्यों को आर्थिक लाभ हुआ है लेकिन इसी कारण से यह क्षेत्र बाहरी ताकतों और तेल कंपनियों की आपसी प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा भी बन चला है। यह क्षेत्र रूस, चीन और अफगानिस्तान से सटा है तथा पश्चिम एशिया से नजदीक है। 11 सितंबर 2001 की घटना के बाद

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

the US wanted military bases in the region and paid the governments of all Central Asian states to hire bases and to allow airplanes to fly over their territory during the wars in Afghanistan and Iraq. However, Russia perceives these states as its 'Near Abroad' and believes that they should be under Russian influence. China has interests here because of the oil resources, and the Chinese have begun to settle around the borders and conduct trade.

अमरीका इस क्षेत्र में सैनिक ठिकाना बनाना चाहता था। उसने किराए पर ठिकाने हासिल करने के लिए मध्य एशिया के सभी राज्यों को भुगतान किया और अफ़गानिस्तान तथा इराक में युद्ध के दौरान इन क्षेत्रों से अपने विमानों को उड़ाने की अनुमति ली। रूस इन राज्यों को अपना निकटवर्ती 'विदेश' मानता है और उसका मानना है कि इन राज्यों को रूस के प्रभाव में रहना चाहिए। खनिज–तेल जैसे संसाधन की मौजूदगी के कारण चीन के हित भी इस क्षेत्र से जुड़े हैं और चीनियों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में आकर व्यापार करना शुरू कर दिया है।

The End of Bipolarity दो ध्ाुवीयता का अंत

In eastern Europe, Czechoslovakia split peacefully into two, with the Czechs and the Slovaks forming independent countries. But the most severe conflict took place in the Balkan republics of Yugoslavia. After 1991, it broke apart with several provinces like Croatia, Slovenia and Bosnia and Herzegovina declaring independence. Ethnic Serbs opposed this, and a massacre of non-Serb Bosnians followed. The NATO intervention and the bombing of Yugoslavia followed the inter-ethnic

पूर्वी य्ाुरोप में चेकोस्लोवाकिया शांतिपूर्वक दो भागों में बँट गया। चेक तथा स्लोवाकिया नाम के दो देश बने। लेकिन सबसे गहन संघर्ष बाल्कन क्षेत्र के गणराज्य य्ाुगोस्लाविया में हुआ। सन् 1991 में बाद य्ाुगोस्लाविया कई प्रांतों में टूट गया और इसमें शामिल बोस्निया–हर्जेगोविना, स्लोवेनिया तथा क्रोएशिया ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। यहाँ 'नाटो' को हस्तक्षेप करना पड़ा; य्ाुगोस्लाविया पर बमबारी हुई और जातीय संघर्ष ने गृहयुद्ध का रूप लिया।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

FLASHBACK: INDIA AND THE USSR

During the Cold War era, India and the USSR enjoyed a special relationship which led critics to say that India was part of the Soviet camp. It was a multi-dimensional relationship:

Economic: The Soviet Union assisted India's public sector companies at a time when such assistance was difficult to get. It gave aid and technical assistance for steel plants like Bhilai, Bokaro, Visakhapatnam, and machinery plants like Bharat Heavy Electricals Ltd., etc. The Soviet Union accepted Indian currency for trade when India was short of foreign exchange

भारत और सोवियत संघ

शीतयुद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध बहुत गहरे थे। इससे आलोचकों को यह कहने का अवसर भी मिला कि भारत सोवियत खेमे का हिस्सा था। इस दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध बहुआयामी थे।

आर्थिक – सोवियत संघ ने भारत के सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों की एसे वक्त में मदद की जब एसी मदद पाना मुश्किल था। सोवियत संघ ने भिलाई, बोकारो और विशाखापट्टनम के इस्पात कारखानों तथा भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स जैसे मशीनरी संयंत्रों के लिए आर्थिक और तकनीकी सहायता दी। भारत में जब विदेशी मुद्रा की कमी थी तब सोवियत संघ ने रुपये को माध्यम बनाकर भारत के साथ व्यापार किया।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Political: The Soviet Union supported India's positions on the Kashmir issue in the UN. It also supported India during its major conflicts, especially during the war with Pakistan in 1971. India too supported Soviet foreign policy in some crucial but indirect ways.

Military: India received most of its military hardware from the Soviet Union at a time when few other countries were willing to part with military technologies. The Soviet Union entered into various agreements allowing India to jointly produce military equipment.

राजनीतिक – सोवियत संघ ने कश्मीर मामले पर संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत के रुख को समर्थन दिया। सोवियत संघ ने भारत के संघर्ष के गाढे दिनों, ख़ासकर सन् 1971 में पाकिस्तान से युद्ध के दौरान मदद की। भारत ने भी सोवियत संघ की विदेश नीति का अप्रत्यक्ष, लेकिन महत्त्वपूर्ण तरीके से समर्थन किया।

सैन्य – भारत को सोवियत संघ ने एसे वक्त में सैनिक साजो–सामान दिए जब शायद ही कोई अन्य देश अपनी सैन्य टेक्नालॉजी भारत को देने के लिए तैयार था। सोवियत संघ ने भारत के साथ कई एसे समझौते किए जिससे भारत संयुक्त रूप से सैन्य उपकरण तैयार कर सका।

The End of Bipolarity दो धा्रुवीयता का अंत

Culture: Hindi films and Indian culture were popular in the Soviet Union. A large number of Indian writers and artists visited the USSR.

संस्कृति – हिंदी फिल्म और भारतीय संस्कृति सोवियत संघ में लोकप्रिय थे। बड़ी संख्या में भारतीय लेखक और कलाकारों ने सोवियत संघ की यात्रा की।

INDIA AND POST-COMMUNIST COUNTRIES

India has maintained good relations with all the postcommunist countries. But the strongest relations are still those between Russia and India. India's relations with Russia are an important aspect of India's foreign policy.

पूर्व–साम्यवादी देश और भारत

भारत ने साम्यवादी रह चुके सभी देशों के साथ अच्छे संबंध कायम किए हैं लेकिन भारत के संबंध रूस के साथ सबसे ज्यादा गहरे हैं। भारत की विदेश नीति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू भारत का रूस के साथ संबंध है। भारत–रूस संबंधों का इतिहास आपसी विश्वास और साझे हितों का इतिहास है।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Indo-Russian relations are embedded in a history of trust and common interests and are matched by popular perceptions. Indian heroes from Raj Kapoor to Amitabh Bachchan are household names in Russia and many postSoviet countries. One can hear Hindi film songs all over the region, and India is part of the popular memory.

भारत–रूस के आपसी संबंध इन देशों की जनता की अपेक्षाओं से मेल खाते हैं। भारतीय हिन्दी फिल्मों के नायकों में राजकपूर से लेकर अमिताभ बच्चन तक रूस और पूर्व सोवियत संघ के बाकी गणराज्यों में घर–घर जाने जाते हैं। आप इस क्षेत्र में हिंदी फिल्मी गीत बजते सुन सकते हैं और भारत यहां के जनमानस का एक अंग है।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

Russia and India share a vision of a multipolar world order. What they mean by a multipolar world order is the co-existence of several powers in the international system, collective security (in which an attack on any country is regarded as a threat to all countries and requires a collective response), greater regionalism, negotiated settlements of international conflicts, an independent foreign policy for all countries, and decision making through bodies like the UN that should be strengthened, democratised, and empowered. More than 80 bilateral agreements have been signed between India and Russia as part of the Indo-Russian Strategic Agreement of 2001

रूस और भारत दोनों का सपना बहध्रुवीय विश्व का है। बहुध्रुवीय विश्व से इन दोनों देशों का आशय यह है कि अंतर्राष्ट्रीय फलक पर कई शक्तियां मौजूद हों; सुरक्षा की सामूहिक जिम्मेदारी हो (यानी किसी भी देश पर हमला हो तो सभी देश उसे अपने लिए खतरा मानें और साथ मिलकर कार्रवाई करें); क्षेत्रीयताओं को ज्यादा जगह मिले; अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों का समाधान बातचीत के द्वारा हो; हर देश की स्वतंत्र विदेश नीति हो और संयुक्त राष्ट जैसी संस्थाओं द्वारा फैसले किए जाएँ तथा इन संस्थाओं को मजबूत, लोकतांत्रिक और शक्तिसंपन्न बनाया जाय। 2001 के भारत-रूस सामरिक समझौते के अंग के रूप में भारत और रूस के बीच 80 द्विपक्षीय दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर हुए हैं।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

India stands to benefit from its relationship with Russia on issues like Kashmir, energy supplies, sharing information on international terrorism, access to Central Asia, and balancing its relations with China. Russia stands to benefit from this relationship because India is the second largest arms market for Russia. The Indian military gets most of its hardware from Russia. Since India is an oilimporting nation, Russia is important to India and has repeatedly come to the assistance of India during its oil crises.

भारत को रूस के साथ अपने संबधों के कारण कश्मीर, ऊर्जा–आपूर्ति, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से संबंधित सूचनाओं के आदान–प्रदान, पश्चिम एशिया में पहुँच बनाने तथा चीन के साथ अपने संबंधों में संतुलन लाने जैसे मसलों में फायदे हुए हैं। रूस को इस संबंध से सबसे बड़ा फायदा यह है कि भारत रूस के लिए हथियारों का दूसरा सबसे बड़ा खरीददार देश है। भारतीय सेना को अधिकांश सैनिक साजो–सामान रूस से प्राप्त होते हैं। चूँकि भारत तेल के आयातक देशों में से एक है इसलिए भी भारत रूस के लिए महत्त्वपूर्ण है।

The End of Bipolarity दो ध्रुवीयता का अंत

India is seeking to increase its energy imports from Russia and the republics of Kazakhstan and Turkmenistan. Cooperation with these republics includes partnership and investment in oilfields. Russia is important for India's nuclear energy plans and assisted India's space industry by giving, for example, the cryogenic rocket when India needed it. Russia and India have collaborated on various scientific projects.

उसने तेल के संकट की घड़ी में हमेशा भारत की मदद की है। भारत रूस से अपने ऊर्जा–आयात को भी बेदारी और निवेश करना भी शामिल है। रूस भारत की परमाण्विक योजना के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। रूस ने भारत के अंतरिक्ष उद्योग में भी ज़रूरत के वक्त क्रायोजेनिक रॉकेट देकर मदद की है। भारत और रूस विभिन्न वैज्ञानिक परियोजनाओं में साझेदार हैं।